नम:ऊँ विष्णुपादाय कृष्ण प्रेष्ठाय भूतले। श्रीमते गोपाल कृष्ण गोस्वामी इति नामिने।

प्रभुपादस्य साहित्य यह प्रकाश्य विर्तिय च । प्रचारम कृतवान साधौ भगवत पादाय ते नम:

गुरु महाराज, आपके चरणकमल की वंदना करती हूं जो कृपा के सागर और गुरु रूप में श्रीहरि ही हैं । आपकी व्यासपूजा पर मैं आपका गुणगान कैसे करूं क्योंकि आप तो सब जानते हैं। कि मुझमें कोई योग्यता नहीं है, यदि आप कृपा करें तो मैं कुछ प्रयास करूं। यदि सारी धरती को कागज मान लिया जाए, सारे जंगल की लकड़ी को कलम बना लिया जाए तथा सात समुद्र की स्याही से भी आपके गुणगान नहीं लिखे जाएंगे। आपकी महिमा अनंत है। आपका ज्ञान असीम है, भला उसे कौन किसी काल में लिख सकता है।मेरे पास योग्यता नहीं है कि मैं आपका गुणगान करूँ, परन्तु अपनी जिव्हा और मन तथा बुद्धि के शुद्धिकरण हेतु ये साहस कर पा रही हूँ। जैसे जब श्री राम ने सेतु बंधन किया तो गिलहरी ने थोड़ी सी सेवा कर उनकी कृपा प्राप्त की, उसी प्रकार आपके बड़े बड़े शिष्य आपकी सेवा व आपका यशोगान कर रहे हैं। मैं उन सबके बीच बहुत छोटी हूँ परन्तु आपकी कृपा की पात्र बनना चाहती हूँ। जैसे श्री राम ने गिलहरी के ऊपर हाथ फेरा था उसी प्रकार मैं भी आपके वरद हस्त की अभिलाषा रखती हूँ।

परम पूज्य श्री गोपाल कृष्ण गोस्वामी भगवत् पाद महाराज, आपके प्राकटय के समय आपका नाम गोपाल कृष्ण खन्ना था, जो इस जगत में सबसे पवित्र दिन, अन्नदा एकादशी १४ अगस्त १९४४ को नई दिल्ली में, भारतीय नौ सेना के प्रमुख अधिकारी के पुत्र के रूप में, एक उच्च कुल में प्रकट हुए। दिल्ली विश्वविद्यालय से विशेष योग्यता के साथ, स्नातक की उपाधि लेने के पश्चात यूरोप गए, जहां आपने फ्रांस सरकार से छात्रवृत्ति प्राप्त कर, पेरिस के सोर्बोन्न विश्वविद्यालय से प्रबंधन कौशल की पढ़ाई की। आपने मॉन्ट्रियल में मेकगिल विश्वविद्यालय से व्यापार प्रबंधन में मास्टर्स की उपाधि प्राप्त की। इसके उपरांत आपने पेप्सी कोला के मार्केट खोज विभाग में कार्य किया और फिर दवाइयों की कंपनी ब्रिस्टल मायर्स में कार्य किया। आपका आध्यात्मिक पथ १९६७ के अंत में शुरू हुआ, जब आपने चर्च, मंदिर, गुरुद्वारा और विभिन्न आध्यात्मिक समुदायों में नियमित रूप से जाना शुरू किया। रविवार की सुबह को एक नए धार्मिक पूजा के स्थान पर जाकर, आप साधारणतया वहाँ पूरे दिन रहते थे और आध्यात्मिक अभ्यास में भाग लेते थे। ३१ मई १९६८ को आप पहली बार मोंट्रीयल के हरे कृष्ण मंदिर में गए। आपको मंदिर के अध्यक्ष श्री महापुरुष दास ने आमंत्रित किया था और उन्हें यह सूचना दी थी कि इस्कॉन के संस्थापकाचार्य, कृष्णकृपामूर्ति श्री श्री मद् ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद, १ जून १९६८ मोंट्रीयल पहुंचेंगे। जब आपने आग्रह किया कि वह कुछ सेवा कर सकते हैं, तो महापुरुष प्रभु ने आपको श्रील प्रभुपाद जी के निवास स्थान को साफ करने के लिए कहा। आपने श्रील प्रभुपाद के निवास स्थान के दरवाजे, शेल्फ, खिड़कियाँ, फ़र्श, सोफे साफ किए। इस तरह श्रील प्रभुपाद से वास्तविक रूप में मिलने से पहले ही आपका श्रील प्रभुपाद के प्रति सेवा भाव प्रकट हुआ। श्रील प्रभुपाद ने मॉन्ट्रियल मंदिर में ३ महीने रुकने का निश्चय किया था। आप प्रवचन सुनने के लिए नियमित रूप से आते और प्रवचन पूरा होने के बाद ही जाते। श्रील प्रभुपाद के साथ व्यक्तिगत संपर्क के कई हफ्तों के बाद, आपने उनका शिष्य बनने का फैसला लिया।

२७ मई १९६९ के दिन २४ वर्ष की आयु में आप श्रील प्रभुपाद द्वारा दीक्षित हुए। श्रील प्रभुपाद ने आपको नया नाम नहीं देने का फैसला किया। जैसा कि साधारणतया ऐसे मामलों में होता है। उन्होंने कहा- क्योंकि तुम्हारा नाम पहले से ही गोपाल कृष्ण है, इसे बदलने की आवश्यकता नहीं है। अब तुम गोपाल कृष्ण दास के नाम से जाने जाओगे। आपने १९७५ तक ब्रिस्टल मायस कंपनी में कार्य जारी रखा और अपनी सारी तनख्वाह इस्कॉन के कनाडा स्थित मंदिर की आर्थिक सहायता के रूप में समर्पित करते रहे। १९७५ में श्रील प्रभुपाद ने, आपको भारत भेजा और इस्कॉन की गवरनिंग बॉडी कमीशन (जी.बी.सी.) का सदस्य नियुक्त किया। १९७६ में आपको भक्तिवेदांता बुक ट्रस्ट का ट्रस्टी नियुक्त किया गया। आपने श्रील प्रभुपाद के तात्पर्यों के साथ, श्रीमद् भागवतम् के प्रथम स्कंध का हिंदी में अनुवाद के साथ और प्रकाशन कार्यों को शुरू किया। श्रील प्रभुपाद विशेष रूप से प्रसन्न थे। जब आप उनके पास हिंदी में श्रीमद् भागवतम् का पहला स्कंध लाए श्रील प्रभुपाद ने अपने पत्र में लिखा:- अब तुम अपने क्रय-विक्रय के ज्ञान को कृष्ण की सेवा में लगा सकते हो। यह शिक्षा की सर्वोच्च सिद्धि है। १९७७ में आपने मास्को अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में बी.बी.टी. के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया और प्रदर्शनी आयोजकों से माननीय डिप्लोमा प्राप्त किया। श्रील प्रभुपाद डिप्लोमा के मिलने पर बहुत प्रसन्न थे और उन्होंने इसे बड़े गर्व से सबको दिखाया, जो भी मिलने गया और कहा कि उनकी पुस्तकों को रूस में भी सराहा गया है।

जब आप, श्रील प्रभुपाद जी से मिलने जाया करते थे तो प्रभुपाद जी के कक्ष में प्रवेश मार्ग पर प्रणाम करते तो, अपना शीश नीचे झुकाते, फिर अपना सिर बारंबार फर्श पर स्पर्श करते। स्पष्ट रूप से यह दृढ़ विश्वास का महान संवेदनात्मक बोध था। केवल नीचे झुकने की औपचारिकता नहीं। तब वे श्रील प्रभुपाद के साथ अनेक विस्तृत वार्ताएं करते। आप गुणों की खान हैं ,जिसमें कुछ निम्न हैंI

विनम्रता - आपके गुरु भाइयों तथा शिष्यों ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। यद्यपि आप ज्ञान का महासागर हैं, फिर भी आप सदैव कहते हैं कि श्रील प्रभुपाद ने जो पुस्तकें दी हैं वो पर्याप्त हैं। हमारे जीवनकाल में यदि हम उनको पढ़कर अंगीकार कर ले तो अन्य किसी ग्रन्थ की आवश्यकता नहीं है। आपने पिछले ६० वर्षों से आज तक कोई लेखनी नहीं दी, ये आपकी विनम्रता का प्रमाण है।

दया : दिल्ली मंदिर में एक बार आपके बाथरूम में बहुत साड़ी चीटियां आ गई थी, आपने उन्हें भगाने के स्थान पर उनके लिए हरिनाम किया। एक बार सड़क पर एक प्राण छोड़ते पक्षी के लिए आप २ किलोमीटर वापिस चलकर उसके लिए हरिनाम करने आये, ये आपकी दया के ही प्रमाण हैं।

सहिष्णुता : हमने देखा है कि दिल्ली मंदिर में आप अपने प्रवचन के स्थान पर अपने गुरु भाइयों को प्रवचन देने के लिए प्रेरित करते है। यदि उनका आगमन उस दौरान हो जाता है आप खुद पीछे हट जाते हैं।

सहनशीलता : मैंने वरिष्ठ भक्तों के के मुख से सुना है कि जब आप ब्रह्मचारी आश्रम में थे तब किसी अन्य ब्रह्मचारी ने आप पर प्रहार किया, आपका रक्त भी बहने लगा था। परन्तु आपने श्रील प्रभुपाद से उसकी शिकायत भी नहीं की, न ही किसी को बताया। आज भी आप हमें यही शिक्षा देते हैं कि नहले पे दहला कभी नहीं करना चाहिए। सदैव सहनशील बन कर वैष्णव अपराध से बचने का प्रयास करना चाहिए।

क्षमा : आपके शिष्य बहुत बड़ी बड़ी गलतियां करते रहते हैं। परन्तु आप सभी को न केवल क्षमा कर देते हैं अपितु उसकी सेवा बढ़ा कर उसे प्रोत्साहित करते हैं, जिससे ज्यादा से ज्यादा समय भक्तों के संग में व कृष्णचेतना में रहकर वह सुधर जाए। ऐसा आप मेरे साथ भी कर रहे हैं।

शांत: आप प्रत्येक प्रतिकूल परिस्थिति में भी शांत बने रहते हैं ,एक बार वृंदावन में सभी सदस्यों के बीच किसी ने आपकों बहुत कुछ बुरा बोला लेकिन आप बिल्कुल शांत बने रहे ,बाद में गल्ती का अहसास होने पर उसी व्यक्ति ने आपसे माफी मांगी।

अव्यर्थकालत्वम::आप कभी भी एक पल का समय भी बर्बाद नही करते यहाँ तक की गाङी मे सफर करतें समय भी जरूरी फोन काॅल किया करते जिससें समय की बचत हो सके.

वैराग्य : : आप अपार संपत्ति व शक्ति के स्वामी हैं। पर फिर भी आप अपने लिए एक पंखा तक नहीं चलाते हैं, ए.सी. तो बहुत दूर की की बात है। जब आपका ऑपरेशन हुआ था तो डॉक्टर्स ने आपको आराम करने को कहा था, परन्तु आप अगले दिन से ही सेवा में आ गए। जब भक्तों ने आपको याद दिलाया की डॉक्टर्स ने आपको रेस्ट करने की लिए कहा है तो आपने उन्हें कहा कि यदि में संस्था में सेवा नहीं करूँगा तो प्रसाद भी ग्रहण नहीं करूँगा। महाराज जी, आप न केवल भौतिक ऐश्वर्यों से विरक्त है अपितु आप अपने शरीर से भी वैराग्य रखते हैं। आपने अपना पूरा जीवन श्रील प्रभुपाद की दिव्य प्रसन्नता के लिए अर्पित कर दिया है। निम्नलिखित कार्य उसके जीवंत उदाहरण हैं :-

१. आपने पूरे विश्व में बहुत सारे मंदिरों का निर्माण किया है जिसमे से १८ तो केवल दिल्ली व एनसीआर क्षेत्र में ही हैं।

२. आपने पूरे विश्व में श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों का प्रकाशन व वितरण किया है जो अभी भी जारी है।

३.आपका जीवन आपके गुरु भाइयों, गुरु बहनों व शिष्यों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

आपका अपने शिष्यों के लिए संदेश :-

1) हमेशा परम पूज्य ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद, अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण चेतना सोसायटी (इस्कॉन) के संस्थापक-आचार्य को सर्वकालिक श्रेष्ठ शिक्षा गुरु के रूप में स्वीकार करें…………….|

हे गुरुदेव!, हे पिता! आपकी इस पावन व्यासपूजा की मंगल बेला पर मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप मुझ पामर को कभी विस्मृत मत कीजियेगा। क्योंकि आपके सिवा मेरा इस त्रिभुवन में कोई नहीं है। मेरा एकमात्र सहारा, शुभचिंतक, मित्र, गुरु, सभी आप ही हैं। आप मुझे अपने निकट रख लेंगे तो मेरे अंदर व बाहर से सारे अभद्र दूर हो जायेंगे। आप जानते हैं कि मैं न तो नियमों का पालन ही ठीक से कर पाती हूँ और न ही भगवान् की सेवा के लिए मेरा कोई प्रेम है। नाम जप भी ध्यान पूर्वक नहीं हो पाता है और अपनी वाणी से सदैव दूसरों के कष्ट का कारण बनी रहती हूँ। मैं अवगुणों की खान हूँ, मेरी आपसे प्रार्थना है कि मुझ मुर्ख अधम, पापी पर दया करके मेरा उद्धार करने की कृपा करें। गुरुदेव मेरी बुद्धि को सरल बालक की तरह बना दीजिये जैसे चैतन्य महाप्रभु ने नारायणी माता को कृष्ण प्रेम में निमग्न बना दिया था। मैं आपकी सतशिष्या बनना चाहती हूँ।

आपकी कृपा कि अभिलाषी।

रमणी प्रिया दासी

सिरसा (हरियाणा) इस्कॉन  EOK DELHI